परिवेश से जुड़ी सामग्रियों से भाषा शिक्षण

पोम्पा घोषाल

कक्षा और पाठ्यपुस्तकों से इतर परिवेश में न जाने कितनी ऐसी सामग्रियाँ है, कितने अवसर हैं जो बच्चों के भाषा शिक्षण की राह को आसान करते हैं। एक शिक्षक जब इस सामग्री और बच्चों के जीवन में मौजूद परिवेश से जुड़े अनुभवों को कक्षा की प्रक्रिया से जोड़ते हैं तब न सिर्फ़ सीखना सुनिश्चित होता है, बल्कि मज़ेदार भी होता है। यह लेख ऐसे ही अनुभवों के बारे में है।

बचपन में मेरे पापा मुझे साइकिल पर बैठाकर दूर-दूर तक घुमाने के लिए ले जाते थे। वे हमेशा मुझसे सड़क के किनारे लगे हुए साइनबोर्डों को ध्यान से पढ़ने के लिए कहते थे। उदाहरण के लिए, उस बोर्ड को पढ़ो; या फिर, देखकर बताओ, इस जगह का नाम क्या है; आदि। धीरे-धीरे, यह मेरी आदत बन गई। मैं रास्ते में आने वाले हर साइनबोर्ड, हर विज्ञापन, हर पोस्टर को पढ़ने लगी। इससे मेरा पढ़ना बेहतर होता गया, और पढ़ने को लेकर आत्मविश्वास भी बढ़ने लगा।

एक शिक्षिका होने के नाते, आज मैं यह मानती हूँ कि विद्यार्थियों का सीखना केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उससे हटकर भी एक बड़ा संसार है। मैंने अपनी कक्षा में अपने बचपन के उन दिनों को लौटा लाने के बारे में सोचा। सच कहूँ, जब कक्षा 4 के सीखने के प्रतिफलों में बाल साहित्य, समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिकाओं के साथ ही होर्डिंग्स को समझकर पढ़ने के प्रतिफल को देखा तो मुझे ध्यान आया कि मैं इस पर कक्षा 3 में पहले भी कार्य कर चुकी हूँ। तब मैंने इसी दस्तावेज़ के 'पाठ्यचर्या सम्बन्धी अपेक्षाओं' में पुस्तकालय, रीडिंग कॉर्नर के साथ ही तरह-तरह की चीज़ों के रैपर से सामग्री ढूँढ़कर पढ़ने के विचार को समझा था। मैं जानती थी जो विद्यार्थी ठीक से पढ़ नहीं पा रहे हैं वो भी रोज़मर्रा की दिनचर्या में दिखाई देने वाले होर्डिंग्स, घर में उपयोग में आने वाली सामग्रियों के रैपर, और इनके अख़बारों में छपे विज्ञापनों से पढ़ने की तरफ़ बढ़ पाएँगे क्योंकि इन सन्दर्भित सामग्रियों में जो दृश्य हैं वो उन्हें अनुमान लगाकर पढ़ने को प्रोत्साहित करेंगे।

बातचीत से बनाया सीखने का माहौल

मन में योजना बन चुकी थी। मैं मुस्कान के साथ कक्षा में आई। मेरे हाथ में बिस्कुट का एक पैकेट था, तथा बैग में अख़बार, मैगज़ीन और काग़ज़ की ढेर सारी पर्चियाँ। मैंने कक्षा में पहुँचते ही नाटकीय ढंग से कहा (ठीक वैसे ही, जैसे एक मशहूर बिस्कुट के विज्ञापन में कहते हैं), "सबसे पहले इसे घुमाओ, फिर इसे चाटो, और आख़िर में इसे डुबाकर खाओ। है न यह बहुत ही स्वादिष्ट! बताओ तो, यह क्या है?"

नव्या तुरन्त जवाब देने के लिए तैयार थी। वह झट से बोली, "मैम, यह एक विज्ञापन है!"

मैंने बिस्कुट का पैकेट उठाया, उसे ऊपर करके दिखाया, और फिर कहा, "हाँ! यह एक विज्ञापन है। अब क्या कोई अन्दाज़ा लगा सकता है कि आज हम कक्षा में क्या करने वाले हैं?"

यह सुनते ही पूरी कक्षा उत्साह से गूँज उठी। नव्या ने तुरन्त अनुमान लगाया और कहा, "विज्ञापन गतिविधि!" उसकी आँखों में चमक थी।

चित्र 1: विज्ञापन के बारे में कुछ सोचते-लिखते विद्यार्थी

चारु बोली, "मैम, हमने तीसरी कक्षा में भी ऐसा ही कुछ किया था न?"

मैं मुस्कुराई और कहा, "बिल्कुल किया था। क्या तुम्हें याद है कि हमने उस गतिविधि में क्या किया था?"

> **मैंने विद्यार्थियों से कहा, "आज तुम्हारे लिए कुछ अख़बार, पत्रिकाएँ और पर्चे लाई हूँ। तुम सभी इन्हें आपस में बाँट लो। फिर तुम्हें अपनी पसन्द की किसी ऐसी चीज़ का विज्ञापन ढूँढ़ना है जो तुम्हारी समझ में आ जाए, और उसे काटकर अलग रख लेना है।"**

चारु ने उत्सुकता से सिर हिलाया और कहा, "हाँ, मुझे याद है! हम अपने घर से कुछ चीज़ें लेकर आए थे, फिर हमने उन्हें कक्षा में दिखाया और उनके बारे में पढ़ा था।"

मैंने ऐसा जताया जैसे मैं कुछ सोचने की कोशिश कर रही हूँ। मैंने कहा, "वह क्या था? मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा है।"

इस पर चारु ने मुझे याद दिलाते हुए विस्तार से बताया, "मैडम, आपको याद होगा कि हम सब नमक, चावल, चॉकलेट, नमकीन जैसी अलग-अलग तरह की चीज़ों के रैपर और चाय पत्ती, माचिस के डिब्बे, ख़ाली बोतलें जैसी कुछ वस्तुएँ अपने घरों से कक्षा में लेकर आए थे। फिर उन सभी चीज़ों पर लिखी जानकारी को ध्यान से पढ़ा, और एक दूसरे के साथ साझा किया था। मुझे याद है, मैं गोंद की एक चौकोर बोतल लाई थी, और उस पर छपा वज़न, मूल्य बनाने वाली कम्पनी का नाम तथा उसके इस्तेमाल करने के तरीक़े के बारे में पढ़ा था। और आपने मुझसे कहा था कि मैं उसे इस तरह पढ़ूँ, 'यह गोंद की एक बोतल है। इसका वज़न 25 ग्राम है।' इसके बाद मैंने गोंद इस्तेमाल करने के तरीक़ों के बारे में भी बताया था। और हाँ, मैंने यह सब लिखने की कोशिश भी की थी।"

मैंने गर्मजोशी से कहा, "बहुत बढ़िया, चारु! तुम्हारी याददाश्त बहुत अच्छी है।"

राजीव ने हाथ उठाया और बोला, "मैडम, हमने ऐसा ही कुछ पहली कक्षा में भी तो किया था!"

"ओह, सच में! क्या किया था?" मैंने उनसे पहली कक्षा की गतिविधि के बारे में बताने को कहा।

मीरा ने आगे कहा, "मैडम, हम सब अपने-अपने घरों से रैपर लेकर आए थे, और हमने उन्हें पढ़ा था। आपने तो उन सभी रैपरों का इस्तेमाल करके एक फ़ाइल भी बनाई थी।"

मैं मुस्कुराई और पूछा, "और उसके बाद क्या हुआ?"

"मुझे याद है, फिर आपने रैपरों में रखा कपड़े धोने का पाउडर, नमक, नारियल तेल, चावल, हल्दी, आदि जैसी चीज़ों के नाम हमसे पूछे थे, और उन्हें बोलते हुए बोर्ड पर लिखा था। फिर हम सबने इन चीज़ों के उपयोग के बारे में बहुत सारी बातें बताई थीं। कुछ बातें बहुत मज़ेदार थीं। सरोज ने बताया था कि सर्दी-खाँसी होने पर पिताजी नमक के पानी से गुड़गुड़ गरारे करवाते हैं।"

मीरा ने बात जारी रखते हुए कहा, "हम उस फ़ाइल को रोज़ पढ़ते थे। वह फ़ाइल बहुत ही सुन्दर और रंगीन थी। क्या हम उसे फिर से बना सकते हैं?"

मैंने सहमति जताते हुए कहा, "हाँ, बिल्कुल! हम उसे अब एक प्रोजेक्ट के तौर पर बना सकते हैं।"

भीम ने मशविरा दिया, "इस बार हम सब अपनी-अपनी फ़ाइलें ख़ुद ही बनाएँगे।"

मैंने हँसते हुए कहा, "हाँ-हाँ, क्यों नहीं! ज़रूर बनाएँगे।"

प्रोजेक्ट के काम की शुरुआत

मैंने विद्यार्थियों से कहा, "आज तुम्हारे लिए कुछ अख़बार, पत्रिकाएँ और पर्चे लाई हूँ। तुम सभी इन्हें आपस में बाँट लो। फिर तुम्हें अपनी पसन्द की किसी ऐसी चीज़ का विज्ञापन ढूँढ़ना है जो तुम्हारी समझ में आ जाए, और उसे काटकर अलग रख लेना है।"

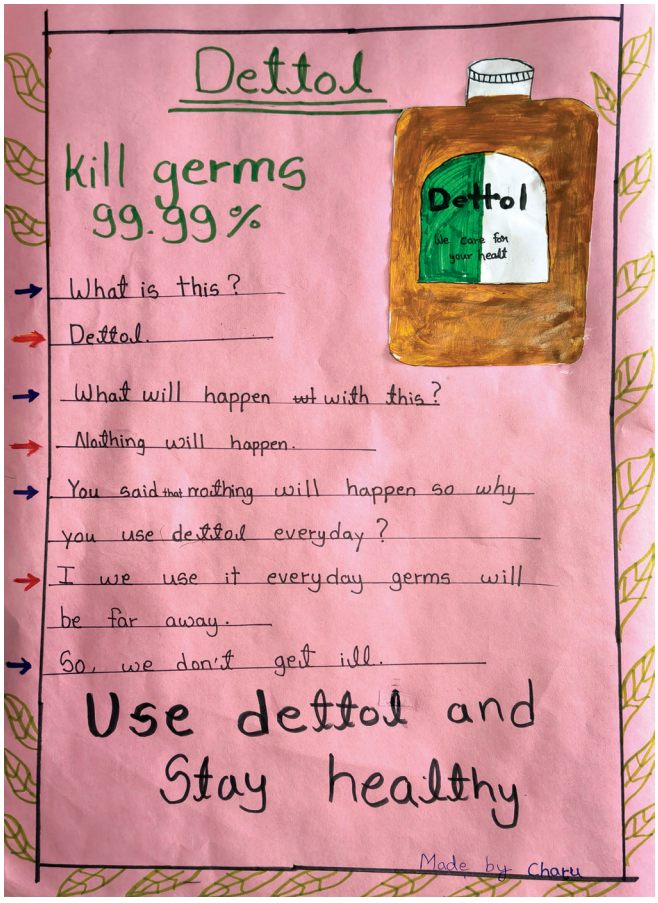

चित्र 2 : विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया विज्ञापन

यह सुनते ही विद्यार्थी काम में जुट गए, और उत्सुकता से पन्ने पलटने लगे। नव्या ने चॉकलेट के एक रंगीन विज्ञापन को हवा में लहराते हुए कहा, "मैम, मुझे एक विज्ञापन मिल गया!"

> **विज्ञापन की गतिविधि में सभी विद्यार्थियों को आनन्द भी आ रहा था और उनका पढ़ना, सवाल करना, नए ढंग से अपनी बात को रखना बेहतर हो रहा था।**

मैंने कहा, "बहुत बढ़िया! अब इस विज्ञापन पर लिखी हर बात को ध्यान से पढ़ो। इसमें इस्तेमाल किए गए शब्दों, चित्रों और नारे (जो कि विज्ञापन का प्रचार वाक्य होता है) को ध्यान से देखो और समझो।"

कक्षा के अन्त तक, प्रत्येक विद्यार्थी के हाथ में अपना चुना हुआ एक विज्ञापन था। मैंने कहा, "अब तुम सब अपने घर जाओ, तथा टीवी पर कुछ और विज्ञापन देखो। रास्ते में जो भी होर्डिंग दिखे उसे पढ़ना। अगर कोई पैकेट वाली चीज़ इस्तेमाल करना तो उसका पैकेट रख लेना, कल हम सब इस बारे में बात करेंगे और मिलकर कक्षा में अपने विज्ञापन बनाएँगे।"

रणनीति को समझना

अगले दिन जब कक्षा शुरू हुई तो विद्यार्थियों में ऊर्जा दिखाई दे रही थी। माहौल बहुत उत्साहजनक था। स्वर्णिका ने बताया कि उसने कल शैम्पू, साबुन, टूथपेस्ट जैसी चीज़ों के ढेर सारे विज्ञापन देखे।

"बहुत बढ़िया!" फिर मैंने उनसे सवाल किया, "क्या तुम लोगों को यह पता है कि कम्पनियाँ कई बार किसी वस्तु का नाम थोड़ा-सा बदलकर, मिलते-जुलते नाम से बाज़ार में नक़ली सामान बेचती हैं?"

यह सुनकर विद्यार्थी एकदम से आश्चर्यचकित हो गए। चारु की आँखें हैरानी से फैल गईं, और उसने पूछा, "क्या यह सच है, मैडम?"

"हाँ," मैंने जवाब दिया, "और अकसर ऐसा होता है कि जो लोग ठीक से पढ़ना नहीं जानते हैं, वे इस तरह के नक़ली सामान को असली समझकर ख़रीद लेते हैं।"

राजीव उत्सुकतावश पूछने लगा, "लेकिन वे ऐसा करते कैसे हैं?"

मैंने समझाया, "वे नक़ली सामान को लगभग असली जैसा ही बनाते हैं। बस उस चीज़ के नाम की वर्तनी में थोड़ा-सा बदलाव कर देते हैं। इससे लोगों को लगता है कि यह असली चीज़ ही है। इसलिए हम जब भी कुछ पढ़ें तो हमें उसे बहुत ध्यान से पढ़ना चाहिए।"

मीरा ने कहा, "यह तो एक तरह का धोखा है!"

"हाँ, बिल्कुल! यह धोखा ही है," मैंने सहमति जताई, "इसलिए ठीक तरह से पढ़ना आना ज़रूरी है।"

विज्ञापन की जादूगरी

मैंने कहा, "अब विज्ञापनकर्ता बनने की बारी तुम्हारी है। कल तुमने जो विज्ञापन काटा था उसे लो, और उसमें मौजूद कुछ शब्दों को बदलकर उन्हें और भी रचनात्मक बनाओ ताकि वह एक नया रूप ले सके। इस तरह अपना ख़ुद का विज्ञापन बनाओ।" इसमें विद्यार्थियों की रचनात्मकता के लिए जगह बनाना, नया सोचना, और उसे लिखना शामिल था।

मैंने विद्यार्थियों को अपने विज्ञापन लिखने के लिए पुराने कैलेंडरों के ख़ाली पन्ने दिए। रंगीन पेंसिलें और क्रेयॉन, गोंद, कैंची, आदि भी साझा किए।

"मैम, क्या मैं एक जादुई शैम्पू का विज्ञापन बना सकती हूँ?" नव्या ने पूछा।

"क्यों नहीं, ज़रूर बनाओ!" मैंने हँसते हुए कहा।

जल्द ही, पूरी कक्षा एक साथ अपनी-अपनी बातें कहने लगी। राजीव ने अपना पोस्टर ऊँचा करके दिखाया, और कहने लगा, "मैम, यह देखिए!" उसके पोस्टर पर बड़े अक्षरों में लिखा था—दुबराज चावल, स्वाद और ख़ुशबू के क्या कहने!

"वाह! यह तो बहुत बढ़िया है।" मैंने कहा।

सुनीता ने कहा, "मैम, क्या मैं छत्तीसगढ़ी में बनाऊँ?"

"हाँ, बनाओ न! यह अच्छी बात है।" मैंने कहा।

"बाह! अब्ड़ महमहात हे, आज दुबराज राँधे हस का वो?" उसने लिखा।

(वाह क्या ख़ुशबू है, घर में आज दुबराज बना है क्या?)

सभी विद्यार्थी बहुत ख़ुश हुए।

एक घण्टे तक चले रचनात्मक काम के बाद प्रस्तुतीकरण का समय आया। सभी विद्यार्थी एक-एक करके आगे आए, और हर एक के हाथ में उनका बनाया हुआ चार्ट था। मीरा ने बड़े ही नाटकीय अन्दाज़ में कहा, "मैम, मेरा विज्ञापन एक ऐसे टूथपेस्ट का है जो आपके दाँतों को मोती की तरह चमका देगा!"

कक्षा ने तालियाँ बजाईं, और मीरा, राजीव तथा सुनीता का उत्साहवर्धन किया। उनके आत्मविश्वास और ख़ुशी को देखकर मुझे बहुत अच्छा लग रहा था।

मिथक बनाम वास्तविकता

विज्ञापनों पर चर्चा के दौरान एक सवाल उठा : "मैडम, क्या सभी विज्ञापन सच्चे होते हैं?"

मैं मुस्कुराई और कहा, "यह बहुत अच्छा सवाल है। तुम्हें क्या लगता है?"

"ऐसा नहीं है," नव्या ने सोच-समझकर कहा, "शैम्पू के विज्ञापन कहते हैं कि वे बालों को लम्बा करते हैं, लेकिन यह सच नहीं है।"

"बिल्कुल," मैंने कहा, "विज्ञापन अकसर कहानी का केवल एक पहलू दिखाते हैं। फ़ेयरनेस क्रीम एक हफ़्ते में गोरी त्वचा का वादा करती हैं, लेकिन क्या यह सच है?"

"नहीं!" पूरी कक्षा सहमति में चिल्लाई।

"मैडम, मेरी मम्मी कहती हैं कि फ़ेयरनेस क्रीम से कोई गोरा नहीं होता। यह सब मार्केटिंग का खेल है," चारु ने बताया।

"हाँ, बिल्कुल सही," मैंने कहा, "वैसे भी फ़ेयरनेस की बात ही गड़बड़ है। गोरा रंग अच्छा होता है और साँवला कम अच्छा, यह तो बात ही ग़लत है। साँवला रंग भी तो कितना सुन्दर होता है! क्यों होना है किसी को गोरा! अगर यह बात समझ लें तो ऐसी क्रीम की ज़रूरत ही नहीं।"

मुझे लगा, यह अवसर है विद्यार्थियों के ज़ेहन में गोरे-काले के भेद की दीवार को कमज़ोर करने का।

रोल प्ले

पाठ्यपुस्तकों के पाठों और उनके अभ्यास प्रश्नों में भी मुझे इस गतिविधि के लिंक मिलने लगे। हमें पाठ 4 'आहार' पढ़ना था। मैंने कहा, "आज हम पाठ पढ़ने से पहले एक गतिविधि करेंगे। पाठ में से कुछ चीज़ें चुनकर उनके विज्ञापन बनाएँगे। एक समूह विज्ञापन बनाएगा, दूसरा ग्राहक बनेगा और विज्ञापन के दावों पर सवाल उठाएगा।"

कक्षा एक मिनी बाज़ार में बदल गई।

पाठ में से जिन चीज़ों की लिस्ट बनी उनमें चावल, दाल, आलू, भिंडी, दूध, दही, केला, आम, अमरूद, आदि चीज़ें शामिल हुईं।

नव्या बड़े आत्मविश्वास के साथ खड़ी थी। उसके चार्ट पर एक बड़ी-सी गाजर का फ़ोटो चिपका था। "यह गाजर है बड़ी कमाल, इसे खाकर आप एक दिन में ही बन जाएँगे पहलवान", उसने ज़ोर से कहा। राजीव ग्राहक की भूमिका में था। उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "क्या सच में? रातोंरात? क्या आप इसे साबित कर सकती हैं?"

नव्या खिलखिलाकर हँसी। "हाँ, यह जादुई गाजर है! आप खाकर तो देखिए।"

कक्षा हँसी से गूँज उठी, लेकिन बात साफ़ थी कि दावों पर सवाल उठाना ज़रूरी है। मैंने देखा, विज्ञापन की गतिविधि में सभी विद्यार्थियों को आनन्द भी आ रहा था और उनका पढ़ना, सवाल करना, नए ढंग से अपनी बात को रखना बेहतर हो रहा था। विद्यार्थी अब होर्डिंग और साइनबोर्ड पढ़ते हुए विद्यालय से घर जाने लगे थे जिनके बारे में अगले दिन कक्षा में बात करते। कुछ विद्यार्थी खाने-पीने वाली चीज़ों के रैपर सँभालने लगे थे ताकि उन्हें अपनी फ़ाइल में चिपकाकर उसके बारे में कुछ लिख सकें। मैं सोच रही थी, आने वाले किस पाठ से जोड़कर फिर से इस गतिविधि को किसी नए तरह से करा सकती हूँ!

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

पोम्पा घोषाल को अध्यापन करने का 28 वर्ष का अनुभव है। वे विगत 10 वर्षों से अँग्रेज़ी पढ़ा रही हैं, और अपने विद्यार्थियों में निरन्तर रचनात्मकता विकास के लिए कार्य करती रहती हैं। वर्तमान में वे बतौर शिक्षिका अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़ में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : pompa.ghoshal@azimpremjifoundation.org